पद १३२

(राग: जोगी मांड - ताल: धुमाळी)

अहा गुरुबोध महावाक्य वर्म। ईश शक्ति लाभ घडे अनायासें।।धू.।। जीव परतंत्र ईश तो स्वतंत्र। शास्त्र (वाक्य) अपवित्र करीं आत्मघाता।।१।। एक ते चैतन्य तोचि जगदात्मा। कीटकादि ब्रह्मा चालक तोची।।२।। हीन दीन पापी ईश्वर प्रतापी। बहू नामरूपी शक्तिच्या प्रभावें।।३।। सज्जन दुर्जन एक स्फुर्ति ज्ञान। ईशशक्ति खूण सत्य त्रिवाचा।।४।। क्रोध विषय भ्रांति सात्विक संपत्ति। दावि आत्मज्योति अखंड प्रकाशें।।५।। भासे वृत्ति नासे नासे चित्र भासे। ईशशक्ति विलसे अनंत ब्रह्मांडीं।।६।। मूळ ज्योति नाश सांगा विद्याधीश। विना धी प्रकाश घडेना कल्पांती॥७॥ ईश ज्ञानामृत सेवा साधुसंत। रहा शक्तिवंत भगवंतरूपें।।८॥ चिन्मार्तांड वदे आत्मविद्या। मूळ अविद्या मावळे ब्रह्मीं।।९।।